आर्योदय

ARYODAYE

Read Aryodaye on line -- www.aryasabhamauritius.mu

Aryodaye No. 324 | ARYA SABHA MAURITIUS | *1st Jan. to 18th Jan. 2016*

LET US LOOK AT EVERYONE WITH A FRIENDLY EYE

- VEDA

शिव-संकल्प मन्त्राः

ओ३म् यज्जाग्रतो दूरमुदैति दैवं तदु सुप्तस्य तथैवैति ।
दुरङ्गमञ्ज्योतिषां ज्योतिरेकं तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु ।।

यजुर्वेद ३४/१

LA PURIFICATION DE L'ESPRIT

Om ! Yajjagrato dūramudaity daivam tadu suptasya tathaivaiti
Durangamam jyotishām jyotirekam tanme manaha shiva sankalpamastu.

Yajur Véda 34/1

Glossaire / Shabdārtha :

yat – celui qui par ta grâce; **daivam** – les attributs / les qualités / le pouvoir de l'âme qui se manifeste par l'intermédiaire de l'esprit ('the mind' en Anglais); **durangamam** – qui va loin, qui mène l'homme très loin, en d'autres mots, qui l'aide à se développer, qui élargit son horizon de connaissance; **jyotishām** – l'esprit qui active tous nos sens et les éclaire; **jyotiha** – lumière spirituelle / divine qui les éclaire; **ekam** – un seul / unique; **jagrataha** – dans l'état de veille; **dūram** – très très loin; **ut, aiti** – qui se déplace ou court très vite, qui est dynamique; **ou** – encore; **tat** – ce / celui qui; **suptasya** – celui qui dort (il peut-être soit en état de rêve soit en profond sommeil); **tathā, eva** – de la même façon; **eti** - qui agrémente ses qualités innées / sa nature / sa spécificité; **me** – mon, ma, mes; **manaha** – état où l'on est; **shiva-sankalpam - astu** – Que celui qui est déterminé à faire du bien au monde soit bien inspiré, et qu'il réussisse.

C'est une autre version aussi inspiratrice et pertinente de ce verset que l'auteur, après recherche, met à la disposition des lecteurs. Il espère qu'ils l'apprécieront.

Introduction

Mon esprit, doué des facultés merveilleuses, parcourt des distances infinies dans des régions lointaines pendant l'état de veille. Il se comporte de la même façon pendant les rêves. Il est "La lumière des lumières", c'est-à-dire, il est le maître de nos sens (la vue, l'ouïe, l'odorat, le toucher, le goût). Il les active, et recueille par leur truchement toutes les informations (visuelles, auditives, émotionnelles et autres), voire les impressions des objets extérieurs, qu'il doit transmettre à l'âme (ātmā) qui est son maître suprême.

Qu'il soit toujours bien inspiré !

cont. on pg 2

N. Ghoorah

एक विशेष गुरुकुल

धर्म-प्रेमी माता-पिताओं की सेवा में सूचित हो कि आर्यसभा 'वैदिक सेंटर यूनियनवेल में भावी धर्मोपदेशकों को प्रशिक्षित करने के उद्देश्य से शीघ्र ही एक विशेष गुरुकुल स्थापित करने जा रही है।

माता-पिताओं से निवेदन है कि यदि वे अपने पुत्रों को भावी धर्म-प्रचारक बनाने के इच्छुक हों तो आर्य सभा के कार्यालय में उपस्थित होकर आवेदन-पत्र भर सकते हैं।

इस गुरुकुल में उन्हीं लड़कों को प्रवेश मिल पायेगा, जो धार्मिक वृत्ति के हों और जिनकी अवस्था बारह से पन्द्रह वर्ष की हो। उन्हें चार भाषाओं-अंग्रेज़ी, फ्रेंच, हिन्दी और संस्कृत का ज्ञान अन्य विषयों के साथ अनिवार्य रूप से प्राप्त करना होगा। छात्रों के चरित्र निर्माण पर विशेष ध्यान दिया जाएगा । स्नातक बनने पर आर्य सभा उन्हें पूर्णकालिक धर्मोपदेशक नियुक्त करेगी ।

इच्छुक छात्रों के शिक्षण-प्रशिक्षण, भोजन आदि का सम्पूर्ण उत्तरदायित्व आर्य सभा पर होगा। यह कार्य उदार दान-दाताओं के सात्त्विक दान से संचालित होगा। विशेष जानकारी के लिए आप सभा-प्रधान डा० उदयनारायण गंगू जी से फ़ोन पर सम्पर्क स्थापित कर सकते हैं। फ़ोन नम्बर है – 52572694

NEW PROJECT

SETTING UP OF AN EXCEPTIONAL / MODEL GURUKUL

Arya Sabha Mauritius (the Sabha) is pleased to announce the setting up of a unique Gurukul at the Vedic Centre at Trois Boutiques Union Vale to train children to be the future missionaries of the Vedic philosophy.

Along with high academic standards, due importance will be given to soft skills such as self-control; character building; universal values, social awareness, purity at the level of mind, body and spirit; awareness of various aspects of life; total personality development; meditation; …etc. thus ensuring that the student stands out from the crowd by getting prepared for real life.

Admissions are open to boys aged between 12-15 years with a penchant for spiritual development and learning of the Vedic Philosophy. Core subjects shall include 4 languages: English, French, Hindi and Sanskrit. Those who successfully complete the programme of studies will be offered full-time employment as priests/ missionaries of the Sabha.

Lodging, boarding and related expenses during the student's stay at the Gurukul will be borne by the Sabha. This programme would be funded by donations from our members and well-wishers who have been generously contributing to the success of the various initiatives of the Sabha.

Parents interested to send their sons are kindly requested to contact the officials of the Sabha at Port Louis and fill in the application form for admission.

Dr. Oudaye Narain Gangoo, President, Arya Sabha Mauritius
Academic Dean, Rishi Dayanand Institute (formerly DAV Degree College)
Mobile No. 5257 2694

शेष भाग पृष्ठ २ पर

सम्पादकीय

नूतन वर्षोत्सव

प्रिय पाठक वृन्द ! हमने तो हँसी-खुशी, शोकानन्द और दुख-सुख में २०१५ का वर्ष व्यतीत किया। पहली जनवरी को हम सभी ने नूतन वर्ष का सूर्योदय बड़े हर्षोल्लास से देखा। प्रातःकाल को बड़ी आस्था के साथ सपरिवार हवन-यज्ञ में भाग लिया। वेद-मन्त्रों द्वारा आहुतियाँ देकर परमात्मा से मंगलमय जीवन प्राप्त करने की प्रार्थना की। साल भर सुख, समृद्धि और आनन्द पूर्वक समय व्यतीत करने की कामना की। हमारी यही आशा है कि २०१६ का नया वर्ष हम सभी देशवासियों के लिए अवश्य ही मंगलकारी हो।

हम सभी लोग भली-भाँति जानते हैं कि समय सदा अपनी गति अनुसार गुज़रता रहता है, वह कभी भी किसी की प्रतीक्षा नहीं करता है। समय का सदुपयोग करने वाले प्राणी वक्त के साथ आगे बढ़ते जाते हैं और जो अमूल्य समय की परवाह नहीं करते हैं, वे जीवन में पीछे रह जाते हैं, समय उन्हें मुड़कर देखता भी नहीं ।

पाठको ! नूतन वर्ष के प्रारम्भ से नवीन-विचारों, धारणाओं, अनुभवों तथा योजनाओं के आधार पर जीने वाले इन्सान ही उन्नतिशील होते हैं। तप-त्याग, पुरुषार्थ और परोपकार करने वाले प्राणी ही अपने दैनिक-कर्मों तथा व्यवहारों द्वारा सभी के लिए हितकारी होते हैं। उनके लिए हर एक दिन बड़ा ही महत्वपूर्ण माना जाता है।

दुर्भाग्य वश अज्ञानी आलसी, प्रमादी, स्वार्थी अपने अशुभ कर्मों द्वारा अमूल्य समय गवाँते जाते हैं, उन आलसी, प्रमादी, स्वार्थी और चरित्रहीन लोगों के लिए नया साल कोई महत्व नहीं रखता है।

हम संसार के सभी प्राणियों में सर्वश्रेष्ठ प्राणी माने जाते हैं। परमात्मा ने हमें शारीरिक शक्ति के साथ ही, बौद्धिक, मानसिक और आत्मिक शक्ति भी प्रदान की है। हमें इन शक्तियों का उचित प्रयोग करते हुए समय के साथ आगे बढ़ते जाना चाहिए। आपसी प्रेम, सहयोग और एकता स्थापित करते हुए पारिवारिक, सामाजिक और राष्ट्रीय उत्थान में पूरा योगदान देना चाहिए, तभी नूतन वर्ष हमारे जीवन में नवीनता लाएगा।

हमें समय के अनुकूल अपनी क्षमता, योग्यता, श्रद्धा और बुद्धिमत्ता बढ़ानी चाहिए। आज के इस वैज्ञानिक युग में अगर हम नवीन विचारों, आविष्कारों तथा नवीनतम विद्याओं को ग्रहण करते हुए जीने की आदत डालेंगे तो निस्संदेह हर एक नया साल हमारे जीवन में नई उमंग लाएगा। हम सभी नागरिक अगर वैयक्तिक, पारिवारिक, सामाजिक और राष्ट्रीय उन्नति के हित में अपना दैनिक कर्म और व्यवहार करते जाएँगे, तो अवश्य ही हम सभी देशवासियों के लिए २०१६ का वर्ष मंगलकारी होगा।

नूतन वर्ष के प्रारम्भ में हम ईश्वर से यही प्रार्थना करें कि हमारे देश में तूफ़ान, बाढ़, अनावृष्टि आदि प्राकृतिक प्रकोपन आएँ। किसी प्रकार के संक्रामक रोग हमें न सताएँ, किसी प्रकार की संकटकालीन स्थिति उत्पन्न न हो, जिससे हम मोरिशसवासी पीड़ित हों।

भाग्यविधाता की ऐसी कृपा हो कि २०१६ का वर्ष सभी सात्त्विक, धार्मिक, निस्वार्थ समाज-सेवकों और परोपकारी जनों के लिए आनन्दमय हो। हमारे देश के समस्त योगियों विकलांगों, अनाथों, असहाय और दुखी लोगों के जीवन में भी थोड़ा सा सुख और आनन्द नसीब हो ।

नूतन वर्ष हमारे पाठकों और समस्त हिन्दू परिवारों के लिए मंगलमय हो।

बालचन्द तानाकूर

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महा सम्मेलन

सत्यदेव प्रीतम,सी.एस.के.,आर्य रत्न - उपप्रधान आर्य सभा

दक्षिणगोलार्द्ध (Southern Hemisphere) के देश ऑस्ट्रेलिया के नगर सिडने में पिछले दिनों ता० २७, २८, और २९ नवम्बर २०१५ को अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महा सम्मेलन का आयोजन हुआ था। उसमें भाग लेने के लिए विश्व के १०-१२ देशों से प्रतिनिधिगण भाग लेने के लिए आये हुए थे। भारत के प्रतिनिधि मण्डल के बाद लघु भारत मोरिशस का मण्डल दूसरे नवम्बर पर था। हमारे मण्डल में ५५ प्रतिनिधि थे जिनमें आर्य सभा के दो अन्तरंग सदस्य थे – उपप्रधान श्री सत्यदेव प्रीतम और उपकोषाध्यक्ष गिरजानन्द तिलक। इतनी भारी संख्या वाले मण्डल का मार्ग दर्शन करना बिल्कुल सहज कार्य नहीं था।

खुशी की बात है कि ५५ लोगों में से अधिकतर लोगों ने त्रिदिवसीय सम्मेलन में नियमित रूप से भाग लिया।

सम्मेलन स्थल सिडने शहर के बाहर वहाँ स्थित था जहाँ पर ऑस्ट्रेलिया की प्रतिनिधि सभा अपने केन्द्र के भवन का निर्माण कर रही है। स्थान लगभग पाँच बीघे का है। देश-विदेश के प्रतिनिधियों के स्वागतार्थ एक विशाल शामियाना बनाया गया था। हमने किसी भी प्रकार की असुविधा का सामना नहीं किया। भोजन की अच्छी व्यवस्था थी। अब डेढ़ दो हज़ार लोगों की देखभाल में अगर कोई कमी हुई होगी तो क्षम्य था।

सम्मेलन स्थल से हम बहुत दूर नहीं थे। जब तक सम्मेलन चला हम मुख्य राजपथ कोलायटोन (Coliton) नामक मध्यमवर्ग होटल में टिके रहे। जिसमें प्रति प्रातःकाल हलके नाश्ता की व्यवस्था थी।

मंगलवार २४.११.२०१५ को रात्रि के १०.४० पर हमने एम.के. ४४० हवाई यान से उड़ान भरी और छः घण्टे और ३५ मिनट के बाद ५८८२ की.मी. (३६५५ मील) की दूरी तय करने के बाद पहला गंतव्य पर्स (Perth) पहुँचे। वहाँ प्रातःकाल के ९.३० बजे थे और मोरिशस का समय सुबह के ५.३० बजे थे। आप अनुमान लगा सकते हैं। दोनों देशों का समयान्तर।

पर्स और मोरिशस के समय में क्या अन्तर है। हमें दोपहर के १५.३० बजे वेर्जिन ऑस्ट्रेलिया से सिडने के लिए उड़ान भरना था। उस समय से फ़ायदा उठाते हुए कुछ लोगों ने सीटी बस द्वारा एक लघु टूर (Tour) किया। शहर के बहुत छोटे भाग का दर्शन कर पाए। शहर की गलियाँ बहुत ही साफ़ सुथरा, ऊँचे-ऊँचे गगन चुंबी भवनों से घिरी हुई। बड़ी-बड़ी दुकानों और गलियों पर हमने विविध जाति के लोगों को देखा। ऑस्ट्रेलिया एक बहुजातीय देश है जिसमें १९४ समुदाय के लोग बसते हैं। एक शब्द में कहा जा सकता ऑस्ट्रेलिया एक छोटी दुनिया है आबादी की विविधता दृष्टि से ।

वर्जिन ऑस्ट्रेलिया हवाई जहाज़ में हम सभी शाम के ३.३० बजे बैठे और रात्रि के १०.३० बजे सिडने पहुँचे। मोरिशस और सिडने के समय में ७ (सात) घण्टे का फ़र्क़ है। भगवान को धन्यवाद दिया कि हम बिना समस्या के सही सलामत पहुँच गए। हवाई अड्डे के बाहर हमें एक ५०-५५ जगह वाली बस इन्तज़ार कर रही थी जिसमें हमारा लोकल गाइड मिस्टर लकी था। हमारे इतने सामान थे कि सब उस बस में नहीं आ पाए; एक दूसरा वाहन देखना पड़ा। जब हम कोलायटोन पहुँचे तो रात्रि के बारह बज चुके थे। किसी को एक अकेला कमरा नहीं मिल पाया। किसी कमरे में दो, किसी में तीन, हम तो चार व्यक्ति हो गए – श्री श्री धरमदेव बिलट, पं० महादेव, सबसे तरुण यश जीतन और खुद मैं। थोड़ा सूझ-बूझ से काम लिया और अन्त में सब ठीक हो गया। हम एक परिवार के समान रहे। स्नान वगैरा करते-करते दो ढाई बज गए। हम तो तीन बजे सुबह सोने गए और उसी दिन ठीक आठ बजे उठ गए। नौ बजे हमें सम्मेलन में भाग लेना था।

लगातार तीन दिनों तक हमने सम्मेलन में भाग लिया। जबसे वार्षिक सम्मेलन हो रहा है, हमने कम से कम पाँच-छः सम्मेलनों में भाग लिया – भारत, होलेण्ड, दक्षिण अफ़्रीका, सिंगापुर-मलेशिया-थाईलेण्ड और ऑस्ट्रेलिया। हरेक सम्मेलन अपने ढंग का होता है। आस्ट्रेवाला प्रशान्त महासागर में है। जिसके पास फीजी और न्यूज़िलैण्ड हैं। वहाँ फीजी वालों का दबदबा था। हालाँकि संख्या में हम अधिक थे पर फीजी वालों की प्रेरणा और सहायता से ऑस्ट्रेलिया में आर्यसमाज स्थापित हो पाया है। दोनों देशों के बीच कम फ़ासले होने के कारण वहाँ के पंडित, विद्वान एवं कार्यकर्ता के आने-जाने की सुविधा है। यहाँ तक कि फ़ीजी वालों ने ही पाँच बीघे ज़मीन खरीद कर ऑस्ट्रेलिया वालों को दी है जिस पर एक विशाल भवन का निर्माण होगा। वहाँ के नौजवानों ने भी पूरा सहयोग दिया सम्मेलन को सफल बनाने के लिए।

भारत की ओर से कोई उच्च कोटि के संन्यासी नहीं आये थे। दो उच्च स्तर के आचार्य थे। पहला आचार्य अशीश जी दर्शनाचार्य, दूसरा आचार्य सनत कुमार वेदाचार्य। आचार्य ज्ञानेश्वर का नाम दिया गया था पर वे उपस्थित नहीं हो पाये। अलबत्ता न्यूयोर्क से आये हुए तरुण विद्वान् डा० सतीश प्रकाश थे जो जन्म से गूयानीज़ हैं। अंग्रेज़ी और हिन्दी का पूरा ज्ञान रखते हैं। इन लोगों ने प्रभावित किया सब से अधिक प्रभावित किया बम्बई के पूर्व पुलिस कमिशनार – जो आज लोक सभा के निर्वाचित सांसद हैं।

मोरिशस की ओर से हमें और पंडित यशवन्तलाल चूड़ामणि को सम्बोधन करने का मौक़ा मिला।

लौटते वक्त हमारा ५५ लोगों का समूह विभाजित हो गया। हमारा ९ व्यक्तियों का ग्रुप ४ नवम्बर को मेलबूर्ण से वर्जिन ऑस्ट्रेलिया द्वारा सीधे पर्स पहुँचे और वहाँ से एम.के. ४४१ से मोरिशस के अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डे पर उतरे। स्थानीय समय के अनुसार हमारी घड़ी में ठीक ५.०५ मिनट हुए थे।

ARYODAYE
Arya Sabha Mauritius
1,Maharshi Dayanand St., Port Louis,
Tel : 212-2730, 208-7504, Fax : 210-3778,
Email : aryamu@intnet.mu,
www.aryasabhamauritius.mu
प्रधान सम्पादक : डॉ० उदय नारायण गंगू, *पी.एच.डी., ओ.एस.के., आर्य रत्न*
सह सम्पादक : श्री सत्यदेव प्रीतम, *बी.ए.,ओ.एस.के,सी.एस.के.,आर्य रत्न*
सम्पादक मण्डल :
(१) डॉ० जयचन्द लालबिहारी, *पी.एच.डी*
(२) श्री बालचन्द तानाकूर, *पी.एम.एस.एम, आर्य रत्न*
(३) श्री नरेन्द्र घूरा, *पी.एम.एस.एम*
(४) योगी ब्रह्मदेव मुकुन्दलाल, *दर्शनाचाय*
Printer : BAHADOOR PRINTING CO. LTD
Ave. St. vincent de Paul, Les Pailles,
Tel : 208-1317, Fax : 212-9038

पृष्ठ १ का शेष भाग

ऋषि दयानन्द संस्थान

RISHI DAYANAND INSTITUTE

(Run by Arya Sabha Mauritius)

सूचना

'धर्म भूषण', 'सिद्धान्त प्रवेश', 'सिद्धान्त रत्न', 'सिद्धान्त प्रभाकर' एवं 'सिद्धान्त शास्त्री' की पढ़ाई शनिवार १६ जनवरी २०१६ से, ९.०० से १२.०० बजे तक *अथवा* कोई अन्य दिन और समय निम्नलिखित केन्द्रों में शुरू होने जा रही है।

(१) ऋषि दयानन्द संस्थान, पाई
(२) गुडलेन्स आर्यसमाज मंदिर
(३) माहेवर्ग आर्यसमाज
(४) मोर्सेल्माँ न्यू ग्रोव, डॉ० हंसा गणेशी विद्या-मंदिर
(५) सुल्याक आर्य भवन
(६) निर्गीन भवन
(७) बो बासें आर्यसमाज
(८) अप्पर दागोच्येर आर्यसमाज
(९) संग्राम भवन, सें पोल
(१०) काच्येर मिलितेर आभेदानन्द आश्रम
(११) मोंताई ब्लाँश आर्य समाज
(१२) ग्राँ पोर सम्मेलन सभा

धर्म शास्त्र में Diploma Course प्रत्येक शनिवार को ९.०० से १२.०० बजे तक 'ऋषि दयानन्द संस्थान' माइकेल लील आवेन्यु, पाई में प्रारम्भ होने जा रहा है।

COURSES IN VEDIC PHILOSOPHY

DHARMA BHUSHAN
SIDDHĀNT PRAVESH (Certificate I)
SIDDHĀNT RATNA (Certificate II)
SIDDHĀNT PRABHĀKAR (Certificate III)
SIDDHĀNT SHĀSTRI (Certificate IV)

Arya Sabha Mauritius is pleased to inform its members, well-wishers and the public that the above courses would start on Saturday 16 January 2016 * from 09.00 a.m. to noon at the following centres :

1. Rishi Dayanand Institute, Pailles
2. Arya Samaj Mandir, Goodlands
3. Arya Samaj Mandir, Mahebourg
4. Dr Hansa Gunessee Educational Centre, Morc. New Grove
5. Arya Bhavan, Souillac
6. Neergheen Bhavan, Eau Coulée
7. Arya Samaj Mandir, Beau Bassin
8. Arya Samaj Mandir, Upper Dagotière
9. Sangram Bhawan, St. Paul
10. Quartier Militaire Abhedanand Ashram
11. Mt. Blanche Arya Samaj
12. Grand Port Sammelan Sabha

(Courses may be run on any other day as per convenience)*

The Diploma Course leading to Dharma Shastra will be run at Rishi Dayanand Institute, Michael Leal Avenue, Pailles, on Saturdays from 09.00 a.m. to noon. The teaching medium for the Diploma Course is Hindi and French.

For further information, please contact Arya Sabha Mauritius (Tel: 212-2730; 208-7504; email: aryamu@intnet.mu)

Dr Oudaye Narain Gangoo

Om ! Yajjagrato dūramudaity daivam tadu suptasya tathaivaiti
Durangamam jyotishām jyotirekam tanme manaha shiva sankalpamastu.

Yajur Véda 34/1

cont. from pg 1

Interprétation / Anushilan

Ce verset et les cinq autres suivants, en provenance du Yajur Véda, traitent de la nature de l'esprit, c'est-à-dire, son fonctionnement. Ces six versets sont prescrits comme prière à l'heure du coucher.

Il faut que nous sachions que la curiosité, voire le désir du savoir ou de l'acquisition de la connaissance est un attribut (qualité naturelle) de l'âme. Ce processus se passe très rapidement et d'une façon bien efficace.

L'esprit communique à l'âme les informations du monde extérieur, et à son tour l'esprit commande aux organes des sens de les lui fournir. Ainsi les sens recueillent les renseignements, les mettent à la disposition de l'esprit qui les transmet à l'âme.

L'esprit est ainsi dénommé "La lumière des lumières", le maître de tous les sens qui l'éclairent par leur pouvoir de recueillir et de communiquer tous les renseignements dont il a besoin pour exécuter l'ordre de l'âme.

L'esprit ne communique pas seulement à l'âme toutes les informations qui lui parviennent des organes des sens, mais il apprécie et retient aussi en lui toutes les impressions créées par elles. C'est dans la nature de l'esprit.

La tâche principale de l'esprit, sauf quand il se concentre ailleurs, est d'agir avec discernement, de prendre toujours la bonne décision dans toutes les circonstances, et aussi de rejeter avec mépris tout ce qui est inacceptable ou condamnable.

L'esprit est extrêment agile, mais on peut arriver à le contrôler par un effort spécial et soutenu de notre part, c'est-à-dire, par la pratique du yoga.

Sa vitesse de penser est inimaginable. Il n'est pas seulement actif quand nous sommes en état de veille, mais il l'est aussi pendant nos rêves. De par sa rapidité, il surclasse même l'avion supersonique conçu par l'homme.

L'esprit est un instrument très puissant que Dieu a donné à l'homme. C'est le centre même d'où parviennent toute sa détermination. S'il est bien géré, guidé par l'intellect dans la bonne direction, il peut produire d'excellents résultats, et peut accomplir des miracles. Au cas contraire il peut détruire la personne.

En conséquence, le fidèle offre cette prière en toute humilité et avec beaucoup de ferveur :

"O Seigneur ! Que par ta grâce mon esprit, qui est un instrument si utile, merveilleux et indispensable à mon âme, soit toujours doté des résolutions nobles et des aspirations sublimes !"

N. Ghoorah

संक्रान्ति के सन्दर्भ में

पंडित यश्वन्तलाल चूड़ामणि, एम.एस.के, आर्य भूषण

सौर-मण्डल के मध्य में स्थित सूर्य ही समस्त ग्रह और नक्षत्रों को धारण किया हुआ है। उसी सूर्य के प्रकाश, ताप तथा विद्युत् शक्ति से पृथ्वी के सभी जड़ और चेतन प्राणी रह पाते हैं। कहा जा सकता है की सूर्य ही सृष्टिकर्त्ता ईश्वर की सभी शक्तियों का प्रतिनिधित्व धरती पर कर रहा है। उसी सूर्य से सम्बन्धित, आकाश-मण्डल में एक महत्वपूर्ण गतिविधि सृष्टि के आरम्भ से अब तक होती चली आ रही है। वह है संक्रान्ति, जो हर महीने में एक बार हुआ करती है। वर्ष की बारह संक्रान्तियों में एक ही ऐसी संक्रान्ति है जो सबसे अधिक महत्व रखती है। वह पौष महीने की मकर संक्रान्ति है जो हर साल चौदह जनवरी को पर्व के रूप में मनाई जाती है। संक्रान्ती का शाब्दिक अर्थ प्रायः संक्रमण करना बताया जात है अर्थात् मन्द गति से खिसकते-खिसकते एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाना। आकाश में हो रही संक्रान्ति का सम्बन्ध पृथ्वी, सूर्य और राशि से है। जब पृथ्वी एक राशि से दूसरी राशि में संक्रमण करती है और इन दोनों के बीच सूर्य होता है तो उसी को संक्रान्ति कहते हैं। परन्तु लोकाचार से प्रायः सभी लोग पृथ्वी के संक्रमण को सूर्य का संक्रमण कहते हैं। वह इसलिए क्योंकि प्रातःकाल सूर्य पूर्व दिशा में उदय होते दिखता है और सायंकाल में पश्चिम दिशा में अस्त होते दिखता है। लगता है कि सूर्य चल रहा है, न कि पृथ्वी। वास्तव में सूर्य तो आकाश-मण्डल में स्थिर है; पृथ्वी सूर्य की परिक्रमा करती है। संक्रान्ति की बात को अच्छी तरह समझने और समझाने के लिए विद्वान् लोग इसी तथ्य का प्रयोग करते हैं कि सूर्य बारी-बारी से बारह राशियों का संक्रमण करता है। ज्योतिष शास्त्र में भी ऐसा ही वर्णन है, जैसे कि पंचांग में लिखा होता है रवि गति प्रारम्भ अर्थात् सूर्य की चाल का प्रारम्भ होता है, जब कि संक्रमण की क्रिया पृथ्वी करती है न कि सूर्य।

सूर्य के विषय में वेदों में सैकड़ों मन्त्र पाए जाते हैं। समस्त प्राणी उसी सूर्य के प्रताप से प्रतिदिन जीवन पाते हैं। संक्रान्ति के विषय में जानने से पहले सूर्य के बारे में थोड़ी सी जानकारी प्राप्त कर लेना अच्छा होगा। प्रतिदिन आकाश में चमकता हुआ वह सूर्य है क्या? वेद और विज्ञान, दोनों बताते हैं कि भिन्न प्रकार की जलती हुई ग़ैसों का वह एक विराट अग्नि-कुण्ड है जो करोड़ों वर्ग किलोमिटर तक आकाश में फैला हुआ है। वैज्ञानिक तथा खगौलिक दृष्टि से सूर्य आकाश-गंगा, याने कि Milky Way का सबसे महत्वपूर्ण एवं सबसे तेज़ चमकने वाला एक तारा है, ग्रह नहीं। परन्तु हिन्दू धर्म के कुछ वर्ग के लोग सूर्य को नौ ग्रहों में एक ग्रह मानते हैं और उसे देवता तुल्य मानकर उसकी पूजा भी करते हैं। सूर्य सौर-मण्डल के मध्य में स्थित है। आकाश की सभी ज्योतिर्मय वस्तुएँ जैसे ग्रह, नक्षत्र, तारे, धुम्रकेतु सूर्य के आकर्षण से दिन-रात उसकी परिक्रमा करते रहते हैं। पृथ्वी से वह तेरह लाख गुना बड़ा है और चौदह करोड़ छियान्बे लाख किलोमिटर की दूरी पर है। सूर्य की बनावट भी जानने योग्य बात हैं। सबसे अधिक, इकहत्तर प्रतिशत, ७१% की hydrogen ग़ैस है। सताईस प्रतिशत, याने कि २७%, helium ग़ैस है। बाकी दो प्रतिशत सत्तर प्रकार की अन्य ग़ैस और धूल हैं। सूर्य का बाहरी तापमान लगभग पाँच हज़ार पाँच सौ डिग्रिज़ सेल्सियस है।

ज्योतिष शास्त्र के आधार पर आकाश में पृथ्वी के चारों ओर बारह मान्य राशियाँ होने के वर्ष में बारह संक्रान्तियाँ मानी जाती हैं। छः संक्रान्तियाँ तब होती हैं जब सूर्य छः महीने पृथ्वी के उत्तरीय अर्धगोले, northern hemisphere से उदय होता है। फिर छः महीने सूर्य पृथ्वी के दक्षिण अर्धगोले, southern hemisphere से उदय होता है तब दक्षिण में छः अन्य संक्रान्तियाँ होती हैं। ज्योतिषियों ने पृथ्वी के चारों ओर बारह काल्पनिक कोण याने कि angle बनाए हैं। प्रत्येक कोण तीस डिग्रिज़ का है और एक राशि के नाम से जाना जाता है। वह राशि उसी तीस डिग्रिज़ के भीतर होती है। तीस डिग्रिज़ के उस राशि क्षेत्र को पार करने के लिए सूर्य को लगभग एक महीना लगता है परन्तु उस राशि पर से गुज़रने के लिए उसे एक दिन या कुछ घण्टे लगते हैं। राशि पर से गुज़रने की इस अवधि को ही संक्रान्ति कहते हैं। पाश्चात्य विद्वान् इसे transition period कहते हैं। समय, वर्ष संवत्सर आदि के सही ज्ञान पाने लिए संक्रान्ति की जानकारी अति आवश्यक है।

हर साल लगभग बाईस सिप्तम्बर से सूर्य पृथ्वी के दक्षिण अर्धगोले में प्रवेश करता है और लगभग बाईस मार्च तक दक्षिण में ही रहता है। इससे दक्षिण अर्धगोले में पाये जाने वाले देशों में बहुत गरमी होती है। दिन लम्बे होते हैं और रातें छोटी होती हैं। जब कि उत्तरीय अर्धगोले के देशों में जाड़े का मौसम होता है। दिन बहुत छोटे होते हैं और रातें बहुत लम्बी होती है। जीवन अव्यवस्थित एवं उत्थल-पुत्थल हो जाता है। लोग बड़ी बेचैनी से उत्तर अर्धगोले में सूर्य के आने की प्रतीक्षा करते हैं क्योंकि सूर्य के उत्तर दिशा में आने पर ही उनकी निराशा के बादल टल सकते हैं। जिस समय सूर्य मकर राशि में प्रवेश करता है, जिसे हम मकर संक्रान्ति कहते हैं, उस समय लोगों को ज्ञात हो जाता है कि अब सूर्य उनकी तरफ़ आने लगा है और कुछ ही दिनों में उनके सारे कष्ट दूर हो जाएँगे। इससे उनका उत्साह बढ़ता है और इसी बात पर लोग पर्व मनाते हैं। कई लोगों का कहना है कि मकर संक्रान्ति के दिन सूर्य का उत्तरायण होता है, अर्थात् सूर्य दक्षिण अर्धगोले से निकलकर उत्तर अर्धगोले में आ जाता है। यह बात सही नहीं है। विज्ञान और ज्योतिष शास्त्र के अनुकूल दिसम्बर महीने से ही सूर्य उत्तर दिशा की ओर चलना आरम्भ कर देता है। यहाँ से लेकर भूमध्य रेखा अर्थात equator तक पहुँचने के लिए सूर्य को तीन संक्रान्तियों से गुज़रना होता है। पहली मकर संक्रान्ति जनवरी में, दूसरी कुंभ संक्रान्ति फरवरी में और तीसरी मीन संक्रान्ति मार्च में। मीन संक्रान्ति के पश्चात् ही सूर्य भूमध्य रेखा, equator, तक पहुँच जाता है जिसे लोग equinox कहते हैं।

यह सर्वमान्य बात है कि बारह महीनों की बारह संक्रान्तियाँ परमात्मा की बनाई हुई एक नियमित प्राकृतिक गतिविधि है। संक्रान्ति से जुड़ी हुई कुछ महत्वपूर्ण बातें हैं जो धरती पर पाए जाने वाले प्राणियों के जीवन को प्रभावित करती रहती हैं। वे हैं साल के बारह महीने और छः ऋतुएँ, जिनका वर्णन वेदों में पाया जाता है। सूर्य की उत्तरायण और दक्षिणायण गति से ही ऋतुओं में परिवर्तन होते हैं। सभी प्राणियों के लिए ऋतु परिवर्तन की यह प्रक्रिया अति महत्वपूर्ण हैं क्योंकि इसी से जल, वायु, ओषधि, वनस्पति और अन्न आदि पुष्ट होते हैं। अगर कुछ देशों में साल भर केवल गरमी होती या केवल ठण्ड होता, कहीं साल भर केवल वर्षा होती या केवल सुखाड़ होता, कहीं केवल रात होती, दिन नहीं होता, तो यह संसार चलता कैसे? परमात्मा भी अन्यायी और पक्षपाती कहलाते। अपनी न्याय व्यवस्था और निष्पक्षता के कारण ही परमात्मा ने सृष्टि की ये सारी व्यवस्थाएँ बनाई हैं जिनमें संक्रान्ति भी एक है। इससे पृथ्वी के कोने-कोने में पाये जाने वाले प्रत्येक प्राणी का कल्याण होता है।

नया साल अभिनन्दन

भगवन्ती घूरा

'नया साल अभिनन्दन' यह आदर्श वाणी सुनने और सुनाने का एक विशेष अवसर है जो आत्मीयता दर्शाता है। मानव बुद्धिजीवी प्राणी है और ईश्वर की सर्वोत्तम रचना भी। इस जीवन को सार्थक, सुगम और मनोहर बनाये रखने के लिए प्रयास करते रहना चाहिए। अतः विशेष अवसरों को महत्व देकर दिनचर्या की नीरसता को दूर करते हुए योजनाएँ बनाकर आनंदित होना एक सद्भाव है। त्योहारों का महत्व तो है ही, वैसे ही विशेष दिवसों को भी महत्व देते हुए हम सामाजिक और पारिवारिक जीवन में उल्लास भरते हैं अतः नया साल के पहले दिन को हम महत्व देते हुए उसे ख़ास से मनाते हैं।

सूर्योदय से हमें प्रतिदिन एक नया दिन प्राप्त होता है और नया साल हरेक साल के बारहवें मास के अंतिम दिन की रात्रि के बारह बजते ही अगले साल का पहला दिन आरम्भ होता है। विदाई और स्वागत पल भर में हो जाता है सब लोग इस घड़ी का लुत्फ़ उठाते हैं। सूर्योदय होते ही हम ईश्वर के प्रति कृतज्ञता पेश करते हैं और प्राणी मात्र के लिए मंगल कामना करते हैं कि हम संमार्ग के पथिक बने रहें। भद्रता से भरपूर हमारा भविष्य उज्ज्वल बना रहा । पूजा अर्चना के बाद परम्परानुसार एक दूसरे का सत्कार करते हैं आशीर्वाद लेना और देना अनिवार्य मानते हैं ताकि यह नव वर्ष सब के लिए आनन्दमय और खुशहाल हो। इच्छानुसार तैयारियाँ और योजनाएँ बनाकर पूरा करते हैं और 'नया साल अभिनन्दन की गूँज से सब लोग प्रसन्न होते हैं और होश और जोश से इस नये साल का स्वागत करते हैं और दिवस को बना देते हैं ख़ास।

पेश हैं एक सार चिंतन के वास्तेः

साल आए या जाये सलामत रहे जीवन निर्माण।
मानव जीवन है अनमोल करना है इसका मान।
कर्म और धर्म से आगे बढ़े लेकर ज्ञान ।
ज्ञान है मानव का एक दिव्य वरदान ।
इस वरदान से करें जीवन का उत्थान ।
उत्तम कर्म से बनती आत्मा महान् ।
महान् आत्मा से ही होता है जग का कल्याण।।

MAKAR SANKRANTI – WITH A LOOK OF DEEP PERCEPTION & SIGNIFICANCE

Sookraj Bissessur (B.A. Hons.)

Festivals are good and happy occasions that enrich social life. Their celebrations rejuvenate congenial relationships within the family and society.

Makar Sankranti – is a festival entirely based on astronomy. It falls on 14 January every year. Many indulge in the erroneous belief that Sankranti augurs the New Year of Hindus. In fact the "Panchang" (Indian Calendar) indicates that the New Year starts on "Chaitra Shukla Pratipada" or "Yugadi" which marks the creation of the universe. "Chaitra" is the first month of the Indian Calendar and Pratipada is the first day of the month.

Makar is a zodiac sign and Sankranti means revolution. Primitive India is reknown for its famous and eminent astronomers who explored the milky way and other constellations. They were among the first to affirm that the earth revolves round the sun from one "Rashi" (Zodiac sign) to another. When the revolution starts on Capricorn, the festival of Makar Sankranti is celebrated. The earth resolves for thirty days in this "Rashi".

Annually there are twelve Sankranti, one in each Rashi. The twelve Rashis are:- *Mesha* (Aries); *Vrish* (Taurus); *Mithun* (Gemini); *Karka* (Cancer); *Singh* (Leo); *Kanya* (Virgo); *Tula* (Libra); *Vrishchik* (Scorpion); *Dhanu* (Sagitarius); *Makar* (Capricorn); *Kumba* (Aquarius) and *Mina* (Pisces). Why is it only "Makar Sankranti" -- is being celebrated?

Sages and Seers have prescribed prayers to celebrate festivals. Rejoicing comes later. The Veda states that God (the Supreme Generator, Operator and Dissolver of the Universe) through his power controls the sun, the very wheel of time. He controls each and every second, minute, hour, day, week, fortnight, month, year and season. He is the only one worthy of worship.

Makar Sankranti relates to the sun and the movement of the earth. The grace of God is invoked through fervent prayers so that everyone may be blessed with a good and a favorable time, a time without excessive heat or cold.

Many seize this glorious opportunity to indulge in various practices. The use of sesame in savories is another popular event.

Bathing at the confluence, of the rivers; Ganga; Yamuna and the invisible Saraswati in Allahabad at the very crack of dawn on Makar Sankranti.

Wearing new clothes and spending the whole day visiting friends and relatives.

Sankranti is also known the "Kitchri" festival in the North of India. Kitchri and sesame – sweet meals energize the body. Families do remember those who have left the fold and assert new ties with others within networks of social and economic relations.

In some regions in India, the veneration of cows is a common feature in the celebration of Makar Sankranti. Bulls and cows are properly washed and their horns painted with multifarious colours. Decorated with flowers garlands and tinkling bells, these animals are then taken into the village.

Kite Flying is another enthralling feature. The brilliant colours epitomize hope, its size in relation to the sky symbolizes the minuteness of man in front of the 'Almighty' and its thread reminds us that the rope of our life is controlled by the "Almighty God".

Festivals also act as a social cement which brings people together and strengthens brotherhood, love, peace, harmony, mutual understanding, amity, courtesy and mutual respect. Festivals symbolise the fundamental values of life.

ARYA SABHA MAURITIUS
Arya Parva 2016
Programmes to be held during the year 2016

1. 14 January - Sankranti
2. 02 March - Sita Ashtami
3. 07 March - Rishi Bodh Celebration
4. 12 March - Independence / Republic day celebration *(To be celebrated 1-2 days before)*
5. 24 March - Holi
6. 08 April - Navsamvatsar utsav & Arya Samaj Sthapna Diwas
7. 09 April - Ram Nawmi
8. 01 June to 30 June - Satyarth Prakash month
9. 20 July to 18 August - Shrawani Upakarma *(The most important religious festival of the Hindus)*
10. 15 August - National Arya Youth Day Celebrations
11. 18 August - Raksha Bandhan
12. 24 August - Krishna Janmasthami
13. 28 September - Guru Virjanand Nirvaan Diwas
14. 01 October - International Vegetarian day
15. 30 October - Deepavali & Rishi Nirvaan Diwas *(To be celebrated 1-2 days before)*
16. 02 November Apravasi Divas *(arrival of indentured labourers)*
17. 14 November Ganga Asnan
18. 23 December Shradhanand Balidaan Diwas

WORLDLY & SPIRITUAL ASPECTS OF SANKRĀNTI

Worldly meaning

Sankrānti is derived from the word sankraman, meaning movement. Sankranti is the movement of the sun from one zodiac sign to another. Given that we daily see the sunlight emerging from the east (sunrise) and fading in the west (sunset) we erroneously believe the sun as moving around whereas in fact it is the planets and constellation which revolves round the sun.

Makar Sankranti *(Uttarāyana)*

Celebrated in the month of Pausha, i.e. on 14 January, it is a festival based on astronomy. The term *Uttarāyana* is derived from two different Sanskrit words '*uttara*' (North) and '*ayana*' (movement) thus indicating a relational northward movement of the Sun on the celestial sphere. This apparent movement is due to the tilting of our planet, the earth at about 23 degrees on its axis.

Uttarāyana, i.e. the period between Makara Sankrānti and Karka

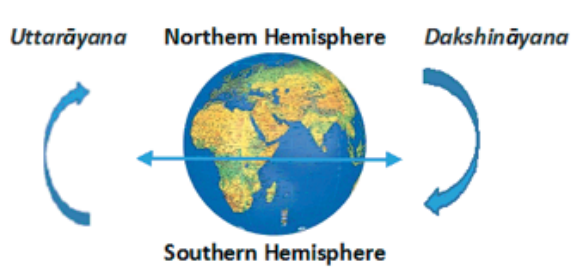

Sankrānti and begins to occur a day after the solstice in December (22 December) and continues for a six-month period through to the next solstice (21 June 21). Due to the tilting of our planet, the earth we also perceive the sun to be moving away from the southern hemisphere into the northern hemisphere. In fact it is the northern hemisphere of the globe which starts to be more exposed to sunlight (longer daylight hours and shorter nights.) Concurrently the southern hemisphere starts to receive less sunlight (shorter days and longer nights). We thus perceive the sun moving.

Dakshināyana, the complement of *Uttarāyana*

Dakshināyana is the period between Karka Sankrānti and Makar Sankrānti (22 June to 21 December). Due to the tilting of the earth we thus perceive the sun to be moving away from the northern hemisphere into the southern hemisphere. In fact during *Dakshināyana* the southern hemisphere of the globe which starts to be more exposed to sunlight (longer daylight hours and shorter nights.) Concurrently the northern hemisphere starts to receive less sunlight (shorter days and longer nights).

Spiritual meaning

The synonym for *sankraman* is *gati*. The *dhātupātha* or Sanskrit root word describes gati as *Jnāna* (knowledge, cognitive event which becomes known when experienced), *gamana* (movement, progress) and *prāpti* (acquisition, attaining goals.)

***Jnāna* (knowledge)**

Astronomy is worldly knowledge *(aparā vidyā)*. The underlying spiritual meaning is knowledge inseparable from the total experience of reality, i.e. self-realisation and God-realisation which is achieved through the acquisition of spiritual knowledge *(parā vidyā, tatva jnāna).*

Gamana (movement, progress)

The practical application of such knowledge will empower us to realise the goals of human life, namely - *Dharma* (a virtuous living), *Artha* (acquisition of material treasures), *Kāma* (using the material treasures to uplift the physical, moral and spiritual welfare of the self as well as of others) and *Moksha* (liberation of the soul from the cycle of birth and death to enjoy the bliss of God.)

***Prāpti* (attaining goals)**

Walking the talk, maintaining a perfect harmony between our thoughts (*manasā*), our speech (*vāchā*) and actions (*karmanā*) is achievable only when we tread on the *shreya mārga* or path already paved by our rishis (seers of yore.)

Sah tu dirdha kāla nairantaira satkārāsevito dridha bhumih (Yog Darshan 1.14) We need to be focused, strong-willed, persevere over long time, regular and be committed. When that practice is done for a long time, without a break, and with sincere devotion, then the practice becomes a firmly rooted, stable and solid foundation. Only then we shall attain the finality as enunciated in the prayer *'mrityur māmritam gamaya',* i.e. from death we shall move towards immortality - Moksha.

The choice is ours : either be content with the worldly meaning of festivals or delve into the spiritual aspects and uplift our spiritual standards. As a prudent driver we shall safely reach our destination whereas reckless driving will lead us to the gutters.

***Yogi* Bramdeo MOKOONLALL,**
Darshanāchārya
Arya Sabha Mauritius, Port Louis

Bibliography :
Arya Parva Paddhati, Dhatupātha, Brihat Hindi Kosha, Surya Siddhānta, Internet

मानसिक एकाग्रता द्वारा सफलता

रामावध राम

'एक शक्ति है जो हमको स्वास्थ्य, सुख, शान्ति, सफलता की ओर ले जाने वाले प्रकाशमान कर सकती है यदि आप उस प्रकाश की ओर उत्सुक हों।'

'परमहंस योगानन्द जी महाराज'

सफलता का सम्बन्ध मनुष्य जिस स्थिति में रहता है, उस स्थिति के अनुसार माने जाने वाली आत्मा की संतुष्टि के साथ है, यह सत्य के सिद्धान्तों पर आधारित कर्मों का परिणाम है और दूसरों के सुख एवं कुशल को अपनी-अपनी परीपूर्ति का एक हिस्सा मानकर अपने में शामिल कर लेती हैं। इस नियम को अपने भौतिक, मानसिक, नैतिक तथा आध्यात्मिक जीवन पर लागू करेंगे तो आप सफलता की संपूर्ण व्यापक व्याख्या पाएँगे ।

जीवन के अपने-अपने लक्ष्य के अनुसार लोगों के सफलता के बारे में अलग-अलग मत है । यहाँ तक कि आप इसे चोरी के सम्बन्ध में भी प्रयुक्त किये जाते सुनते हैं। वह सफल चोर था। इसे पता चलता है कि सफलता नहीं है। हमारी सफलता से किसी और को दुख नहीं होना चाहिए। सफलता का एक अन्य लक्ष्य यह है कि इससे हम केवल अपने लिए सुखकारक तथा लाभप्रद करते हैं, बल्कि दूसरों को भी उन परिणामों के दौरान लाभ होता है। कल्पना कीजिए कि कोई गृहिणी दीर्घ मौन रखने के आध्यात्मिक व्रत का अभ्यास करती है और ऐसे अभ्यास के दौरान अपने पति तथा बच्चों से भी बात नहीं करती। वह मौन रखने में सफल हो सकती हैं और उसके परिवार के सुख के लिये सफल नहीं हो सकती ।

(शेष बाद में)

Vedas and Vedanta, Concepts and Misunderstandings (6)

Prof. Soodursun Jugessur, D.Sc, (Dharma Bhushan, Arya Bhushan)

Resumé of first five parts on this theme

The origins of the Vedas and the Vedanta were mentioned. The impact of Buddhism on Hinduism and the advent of Brahmanism, with the concept of Maya or illusion, the uniqueness of the supreme Brahman (Monism) and (Adwaita), as different from Dwaita, then followed. We then showed how this concept brought a strong element of indifference together with many other evils, and the cause of India's decline.

In this **final** part we shall highlight how the Vedas bring us back to the foundations of sensible living, with a positive attitude to life where action determines our future, and where faith in the divine is complemented by our own duties and their performance.

Introduction

Swami Vivekananda gave a new interpretation to Vedanta through his connotation of Practical Vedanta, as elaborated in Part 2 of this series. If we go by his interpretation, there is no problem, but if we go by the commonly accepted ones, we do see what has happened.

These days the findings of Quantum Theory in Physics are being branded to prove the validity of the non-dualistic nature of Brahman so as to assert Monism. Here we must caution readers who have to know that though Quantum Theory has been verified by practical experiments, and Einstein's theory of relativity validated, the latest theories of the Standard Model and String Theories are yet to be validated experimentally. Empirical justification rests on the same conditions that apply in any place or time.

We now go back to our Vedic approach to life.

Exhortations of the Vedas on Action

Here are some of the exhortations of the Vedas on action :

1. 'Karma kuru', i.e. Have recourse to action!
2. 'Karma Irinavantu manushaha', i.e. May men act in this life!
3. 'Karmane vam', i.e. Oh men and women, you are born to act !
4. 'Karmani chakraha pavamam dhiraha' i.e. Men with soul force and courage are always active.
5. 'Karmara ye manishinaha', i.e. Wise men are always active and full of energy.
6. 'Karmasi' i.e. Your essence it's action. You are the very principle of action.
7. 'Karmane hastan vistishtan' i.e. Your hands are for action.
8. 'Karmachame Shaktishrame' i.e. May my actions bear rich and abundant fruits.
9. 'Atmana vindate viryuyam' i.e. All the force for action comes from the interior.
10. 'Ktitame dakshine haste jayome savya ahitaha' i.e. May your right hand be ready for Action, and victory will be in your left hand.

All these Vedic exhortations show that action is life, and inaction is death and decadence.

These leave the responsibility for action on the human spirit, and do not take a passive and fatalistic position that invariably leads to destruction. If only the Hindus realized this injunction, they would not be the victim of foreign invasions, and domination of others in the control of their lives. The spirit of the Aryas must once again motivate the present day Hindus to act, and act in time so that future generations shall be proud of the legacies of independence and development that will be left behind by the present generation. Negativism, an essential component of misinterpreted Vedanta, must be eschewed, and the positivism of the Vedas brought back in full earnest. If this is not heeded, and we apply the principles of negativism, nihilism and maya to our lives, we should say good-bye to all efforts to transform this country and the world as a place where the tireless efforts of the United Nations to build a better society becomes a reality.

This short article has brought out the main difference between Vedic and popular, post Shankara Vedantic attitude to life. Today, once again after centuries, the passive and fatalistic attitude to life, inherent in the belief that there is no difference between the individual soul and the supreme Brahman, and that all that is, including our own actions and their results, are only expressions of the Supreme spirit, are leading to overall weakness of the society and the individual. It is promoting indifference to social evils in many quarters, and social reform is not a priority as all that we see, they claim, is preordained, and is another aspect of the Brahman.

Individual well-being is unfortunately gaining precedence over social and community welfare. People have developed double standards, one as 'strictly private and personal' and one for others. They still preach the oneness of Vedanta, but practice different paths depending on what suits them most. They have prescribed different norms for different people based on their birth, and say: 'My dharma is not your dharma!' Social oppression is tolerated as long as it does not affect them. To top it all, they teach the people that their sins can be washed away by making offerings and taking dips in the Ganges! Can the laws of karma be avoided?

In our beautiful island, many followers of the Vedic faith have unfortunately been classified by self-seeking politicians as belonging to the traditional lower strata of the Hindu society, not knowing the fact that the Vedic dharma is for all, irrespective of place or family or birth. This is far from the truth, and all should try to assert the positivism of the Vedas, as was the case a century ago when soldiers and learned people asserted the primacy of social justice and Vedic realism.

Hence the need for re-establishing the supremacy of Vedic philosophy and for convincing people that many aspects of misunderstood Vedanta are not compatible with daily living and survival of the human race. For this to happen, there is need to promote research, the study of the Vedas, and train pandits and missionaries to better understand the social implications of these teachings, and empowering them to preach proper Vedic religion. Otherwise everybody will swear by the Vedas without understanding the meaning of the philosophy contained therein.

Let us remember that if we want the true picture of the Vedas, we have to be rational in our interpretation of the texts. The Gayatri Mantra or Mahamantra, ia a prayer to the Lord to illumine our intellect and strengthen our power of understanding. We have to go back to the Vedas and understand why there is no room for blind fatalism! We have to adopt the fighting spirit of the *Bhagwat Gita* and perform our duty in the spirit of dedication and commitment, leaving the results in the hands of the Lord. The message of the Vedas and of the Society of the Noble is as primordial now as it was a hundred years ago!

Nobody really has the monopoly of absolute truth! Indian philosophy is replete with a variety and diversity of doctrines. At the same time there is a desire to forge a path that will make us all converge, and have one vision of the common destiny of mankind :

Sangacchadhwan, samvadadhwam, samvomanānsi jānatām |
Devā bhāgam yathā purve, sanjānānā upāsate ||

Let us walk together, let us talk with one voice, let us have one common mind, Just as our ancestors used to participate in common prayers and share the offerings.

Too much rationalism may lead to agnosticism, as was the case with Gautama Buddha, while too much blind faith may lead to abject superstition. A proper mix of rationalism guided by personal intuitive experiences is what can lead to a better understanding of what is, and what we need to be. In all this, as the above Vedic mantra prescribes, concerted efforts for a common path wherein all humanity can forge ahead is the aim of mankind. Such concerted effort is possible only when we realize that eventual harmony between man and man and harmony with all creation is prerequisites to this goal. Again our eternal dharma teaches us :

One who sees all creatures existing within the Supreme, and the Supreme existing in all, his mind is in peace with no doubts to disturb it. (Yajur Veda 40/6)

It is towards this ideal that global organizations are now working. And this is the goal prescribed by our ancestors in our old scriptures.

To sum up, misinterpreted post Shankara Vedanta mislead people towards a life of fatalism and superstitions, while the Vedas teach us to make conscious efforts to change ourselves and the environment so as to bring peace, harmony and prosperity to all based on our actions and the Law of Karma.